शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

राजेंद्र यादव के उपन्यास साहित्य में मध्यवर्गीय समाज का चिंतन

प्राप्तिः 13.12.2022
स्वीकृतः 24.12.2022

86

डॉ० संध्या गडकोटी
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय रामगढ़, नैनीताल (उत्तराखंड)
ईमेलः *sandhyagarkoti24@gmail.com*

सारांश

हिंदी साहित्य के नई कहानी आंदोलन' के प्रमुख हस्ताक्षर राजेंद्र यादव ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से भारतीय मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं, अंतर्विरोधों तथा मानसिक द्वंद्वों को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में राजेंद्र यादव के प्रमुख उपन्यासों' सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'कुलटा', 'शह और मात' आदि के आधार पर मध्यवर्गीय समाज के विविध पक्षों का अध्ययन किया गया है। राजेंद्र यादव ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज में उत्पन्न परिवर्तनशील परिस्थितियों को निकट से देखा। शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, पारिवारिक विघटन, स्त्री–स्वातंर्त्य की चेतना और नैतिक मूल्यों के संक्रमण ने मध्यवर्गीय समाज को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी आकांक्षाओं और सामाजिक बंधनों के बीच निरंतर संघर्ष करता दिखाई देता है। विशेषतः 'सारा आकाश' में दांपत्य जीवन की घुटन, पारिवारिक रूढ़ियाँ तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की आकांक्षा का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की कृत्रिम नैतिकता, पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक बनावट पर तीखा प्रश्नचिह्न लगाया। उनकी रचनाएँ आधुनिक भारतीय समाज में व्यक्ति की पहचान, स्वतंत्रता और मानवीय संबंधों के संकट को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती हैं। इस प्रकार राजेंद्र यादव का उपन्यास साहित्य हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के विकास और उसके अंतर्विरोधों की गहरी अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित होता है।

मुख्य शब्दः *राजेंद्र यादव, मध्यवर्गीय समाज, नई कहानी आंदोलन, सामाजिक यथार्थ, दांपत्य संघर्ष, आधुनिक चेतना।*

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में जिन साहित्यकारों में राजेंद्र यादव का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे 'नई कहानी आंदोलन' के प्रमुख स्तंभों में गिने जाते हैं। उनके साहित्य में व्यक्ति और समाज के संबंधों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मिलता है। विशेषतः भारतीय मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक विघटन, दांपत्य तनाव, स्त्री–पुरुष संबंधों की जटिलता तथा आधुनिक जीवन की घुटन को उन्होंने अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित किया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर नए मूल्य विकसित हो रहे थे। संयुक्त परिवार टूट रहे थे, शहरीकरण बढ़ रहा था, शिक्षा और रोजगार की नई संभावनाएँ सामने आ रही थीं तथा व्यक्ति की

चेतना में आधुनिकता का प्रवेश हो रहा था। इन परिवर्तनों का सबसे अधिक प्रभाव मध्यवर्गीय समाज पर पड़ा। यह वर्ग परंपरा और आधुनिकता के बीच लगातार संघर्ष कर रहा था। राजेंद्र यादव ने इसी संघर्षशील मध्यवर्ग को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया।

यह कथन उपन्यास की केंद्रीय संवेदना को स्पष्ट करता है। उपन्यास का नायक समर एक ऐसे युवा का प्रतिनिधित्व करता है, जो आदर्शों और यथार्थ के बीच फँसा हुआ है। वह स्वतंत्र जीवन जीना चाहता है, किंतु पारिवारिक संस्कार और सामाजिक दबाव उसे निरंतर बाँधे रखते हैं। समर और प्रभा का संबंध केवल पति–पत्नी का संबंध नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय मानसिकता का प्रतीक बन जाता है।

राजेंद्र यादव का जन्म 28 अगस्त 1929 को आगरा में हुआ। उन्होंने हिंदी साहित्य में कहानी, उपन्यास, आलोचना और संपादन के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे लंबे समय तक प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'हंस' के संपादक रहे। उनके साहित्यिक जीवन पर नई कहानी आंदोलन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। नई कहानी आंदोलन ने व्यक्ति के आंतरिक जीवन, अकेलेपन और सामाजिक विघटन को केंद्र में रखा। इस आंदोलन के प्रमुख रचनाकारों में मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

नई कहानी आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसने आदर्शवादी दृष्टिकोण के स्थान पर 'भोगे हुए यथार्थ' को महत्व दिया। राजेंद्र यादव ने इस यथार्थ को मध्यवर्गीय जीवन के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनके पात्र किसी काल्पनिक आदर्शलोक के निवासी नहीं हैं, बल्कि वे वास्तविक जीवन की समस्याओं से जूझते साधारण मनुष्य हैं। वे आर्थिक संकट, बेरोजगारी, पारिवारिक दबाव, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संघर्षरत दिखाई देते हैं।

राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय समाज की नैतिकता पर भी गंभीर प्रश्न उठाए हैं। उनके अनुसार यह वर्ग बाहरी रूप से नैतिकता और आदर्शवाद का प्रदर्शन करता है, किंतु भीतर से वह असुरक्षा, संकीर्णता और दोगलेपन से भरा हुआ है। उनके उपन्यास 'कुलटा' में स्त्री–स्वतंत्रता और सामाजिक नैतिकता का तीखा संघर्ष दिखाई देता है। समाज जिस स्त्री को 'कुलटा' कहकर अपमानित करता है, लेखक उसी स्त्री के माध्यम से मध्यवर्गीय पितृसत्तात्मक सोच की आलोचना करता है।

उनकी रचनाओं में स्त्री–चेतना का स्वर भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्त्री को केवल करुणा की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व और चेतन अस्तित्व के रूप में चित्रित किया। नई शिक्षा और आधुनिक चेतना के प्रभाव से मध्यवर्गीय स्त्री अपनी स्वतंत्र पहचान की तलाश कर रही थी। राजेंद्र यादव ने इस बदलती स्त्री–चेतना को गहराई से समझा।

राजेंद्र यादव का साहित्य केवल सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज नहीं है, बल्कि वह मध्यवर्गीय मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी है। उनके पात्र भीतर से टूटे हुए, अकेले और असुरक्षित हैं। आधुनिक जीवन में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और सामाजिक अपेक्षाएँ व्यक्ति को मानसिक रूप से विखंडित कर देती हैं। इस संदर्भ में उनकी कहानी 'टूटना' विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें संबंधों के विघटन और भावनात्मक दूरी का मार्मिक चित्रण मिलता है।

राजेंद्र यादव की भाषा और शैली भी उनके साहित्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। उनकी भाषा सहज, संवादधर्मी और जीवन के निकट है। वे बोलचाल की भाषा, प्रतीकों और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से पात्रों की आंतरिक स्थिति को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में तद्भव, देशज तथा उर्दू–फारसी षब्दों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक जीवंत बन जाती हैं।

राजेंद्र यादव ने हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि मध्यवर्गीय समाज केवल आर्थिक इकाई नहीं है, बल्कि वह मानसिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संघर्षों का केंद्र भी है। उनके साहित्य में व्यक्ति अपनी अस्मिता की खोज में निरंतर संघर्ष करता दिखाई देता है। यही संघर्ष उनके उपन्यासों को सामाजिक यथार्थ और मनोवैज्ञानिक गहराई दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण बनाता है।

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में राजेंद्र यादव का योगदान इसलिए भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने व्यक्ति की निजी समस्याओं को व्यापक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर देखा। उनके पात्रों का संघर्ष व्यक्तिगत होते हुए भी सामाजिक यथार्थ का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यवर्गीय समाज की कुंठाएँ, आकांक्षाएँ और विडंबनाएँ उनके साहित्य में पूर्ण संवेदनात्मक तीव्रता के साथ व्यक्त हुई हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजेंद्र यादव का उपन्यास साहित्य भारतीय मध्यवर्गीय समाज का प्रामाणिक और जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं, अंतर्विरोधों और बदलती सामाजिक चेतना को जिस गहराई और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया, वह हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। उनके साहित्य में आधुनिक भारतीय समाज की मानसिक संरचना, सामाजिक विघटन और व्यक्ति की अस्मिता की खोज का अत्यंत प्रभावषाली चित्रण मिलता है। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना अपने समय में था।

राजेंद्र यादव के उपन्यास साहित्य में भारतीय मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं, संघर्षों और अंतर्विरोधों का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। उनका साहित्य केवल कथा–विन्यास तक सीमित नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्रोत्तर भारतीय समाज की मानसिक संरचना का दस्तावेज भी है। विशेष रूप से मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक असुरक्षा, दांपत्य संघर्ष, पारिवारिक विघटन, स्त्री–स्वातंत्र्य, नैतिक संकट तथा आधुनिक जीवन की घुटन उनके उपन्यासों के प्रमुख विषय हैं। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के भीतर व्याप्त खोखले आदर्शों और कृत्रिम नैतिकता को गहराई से समझा तथा उसे यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त किया।

1. मध्यवर्गीय जीवन की घुटन और अस्तित्व संकट– राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय व्यक्ति निरंतर मानसिक घुटन और अस्तित्वगत संकट से जूझता दिखाई देता है। यह संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भी है। 'सारा आकाश' का नायक समर इसी मानसिक संघर्ष का प्रतिनिधि पात्र है। वह उच्च आदर्शों और पारिवारिक वास्तविकताओं के बीच फँसा हुआ है। विवाह के बाद उसका जीवन और अधिक जटिल हो जाता है। समर की मानसिक स्थिति को व्यक्त करते हुए लेखक लिखते हैं–

"घर की दीवारें जैसे साँस लेने नहीं देतीं।"[2]

यह कथन केवल समर की व्यक्तिगत पीड़ा नहीं, बल्कि पूरे मध्यवर्गीय समाज की घुटन का प्रतीक है। संयुक्त परिवार की परंपराएँ, सामाजिक अपेक्षाएँ और आर्थिक सीमाएँ व्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करती हैं। व्यक्ति अपनी इच्छाओं को दबाकर सामाजिक मान–मर्यादा निभाने के लिए विवश हो जाता है।

नई कहानी आंदोलन के संदर्भ में यह घुटन आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन से जुड़ जाती है। राजेंद्र यादव के पात्र बाहरी दुनिया में सक्रिय दिखाई देते हैं, किंतु भीतर से वे टूटे हुए और अकेले हैं।

"भीतर का खालीपन किसी से नहीं भरता।"[3]

यह पंक्ति आधुनिक मध्यवर्गीय व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है। व्यक्ति सामाजिक संबंधों में रहते हुए भी आत्मीयता से वंचित है। यही अकेलापन उसे कुंठा और निराशा की ओर ले जाता है।

2. दांपत्य जीवन और पारिवारिक विघटन– राजेंद्र यादव के उपन्यासों में दांपत्य संबंधों की जटिलता एक प्रमुख विषय है। उन्होंने विवाह संस्था के भीतर व्याप्त संवादहीनता, मानसिक दूरी और अहं संघर्ष को गहराई से चित्रित किया है। 'सारा आकाश' में समर और प्रभा का संबंध मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन की त्रासदी का प्रतीक बन जाता है। विवाह के बाद भी दोनों के बीच आत्मीयता स्थापित नहीं हो पाती। समर प्रभा को अपनी स्वतंत्रता में बाधा मानता है, जबकि प्रभा अपने अस्तित्व और सम्मान के लिए संघर्ष करती है। इस संदर्भ में लेखक लिखते हैं

"पति–पत्नी साथ रहते हुए भी अजनबी बने रहते हैं।"[4]

यह कथन आधुनिक मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन की विडंबना को प्रकट करता है। विवाह सामाजिक रूप से स्वीकार्य संस्था तो है, किंतु उसमें भावनात्मक संवाद का अभाव दिखाई देता है।

राजेंद्र यादव ने संयुक्त परिवार व्यवस्था की समस्याओं को भी गंभीरता से उठाया है। परिवार, जो कभी सुरक्षा और आत्मीयता का केंद्र माना जाता था, अब व्यक्ति के लिए तनाव और दमन का कारण बनता जा रहा है।

"परिवार अब आश्रय नहीं, बोझ बनता जा रहा था।"[5]

यह कथन बदलते सामाजिक मूल्यों की ओर संकेत करता है। आधुनिकता और व्यक्तिवाद के प्रभाव से पारिवारिक संबंधों में दूरी बढ़ती जा रही थी। लेखक ने इस परिवर्तन को अत्यंत यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

3. आर्थिक संकट और सामाजिक असुरक्षा– मध्यवर्गीय समाज की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक असुरक्षा है। सीमित आय, बेरोजगारी और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता व्यक्ति को निरंतर तनावग्रस्त बनाए रखती है। राजेंद्र यादव के पात्र अपनी आवश्यकताओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाने में असफल दिखाई देते हैं।

"रोटी और सम्मान के बीच आदमी बँट जाता है।"[6]

यह कथन मध्यवर्गीय जीवन के मूल द्वंद्व को अभिव्यक्त करता है। व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने का प्रयास करता है। यही कारण है कि वह लगातार मानसिक दबाव में जीता है।

'उखड़े हुए लोग' में विस्थापन और असुरक्षा की भावना इसी आर्थिक संकट से जुड़ी हुई है। स्वतंत्रता के बाद बदलती सामाजिक संरचना में मध्यवर्गीय व्यक्ति स्वयं को अस्थिर और असुरक्षित महसूस करता है।[7]

लेखक ने स्पष्ट किया है कि आर्थिक संकट केवल भौतिक समस्या नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के संबंधों और मानसिकता को भी प्रभावित करता है। आर्थिक अभाव व्यक्ति के आत्मविश्वास को तोड़ देता है और उसे निराशा की ओर ले जाता है।

4. स्त्री–चेतना और पितृसत्तात्मक समाज– राजेंद्र यादव के साहित्य में स्त्री–चेतना का स्वर अत्यंत मुखर है। उन्होंने स्त्री को केवल करुणा की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। 'कुलटा' उपन्यास में स्त्री–स्वातंत्र्य और सामाजिक नैतिकता का तीखा संघर्ष दिखाई देता है।

लेखक प्रश्न उठाते हैं– "स्त्री को हमेशा त्याग की मूर्ति क्यों माना जाए?"[8]

यह प्रश्न मध्यवर्गीय समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता पर सीधा प्रहार करता है। समाज स्त्री से आदर्शवादी व्यवहार की अपेक्षा करता है, किंतु उसे अपनी इच्छाओं और स्वतंत्रता को व्यक्त करने का अधिकार नहीं देता।

स्त्री–स्वतंत्रता के संदर्भ में लेखक का दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील है। वे स्त्री को पुरुष की छाया नहीं, बल्कि समान अधिकारों वाले स्वतंत्र मनुष्य के रूप में स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य स्त्री विमर्श की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

5. मध्यवर्गीय नैतिकता और सामाजिक आडंबर– राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय समाज की कृत्रिम नैतिकता पर तीखा व्यंग्य किया है। उनके अनुसार यह वर्ग बाहरी रूप से आदर्शवाद और नैतिकता का प्रदर्शन करता है, किंतु भीतर से वह भय, असुरक्षा और संकीर्णता से भरा हुआ है।
"नैतिकता अक्सर भय का दूसरा नाम है।"[9]

मध्यवर्गीय समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखने की प्रवृत्ति व्यक्ति को कृत्रिम जीवन जीने के लिए बाध्य करती है। वह अपने वास्तविक भावों और इच्छाओं को छिपाकर सामाजिक आदर्शों का अभिनय करता रहता है। राजेंद्र यादव ने इस आडंबरपूर्ण जीवन को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है।

6. आधुनिकता और परंपरा का द्वंद्व– राजेंद्र यादव के उपन्यासों में आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके पात्र आधुनिक शिक्षा और विचारों से प्रभावित हैं, किंतु पारंपरिक संस्कार उन्हें स्वतंत्र रूप से जीने नहीं देते।
"नई सोच पुराने संस्कारों से टकराती रहती है।"[10]

यह संघर्ष विशेष रूप से युवा पीढ़ी में दिखाई देता है। समर जैसे पात्र आधुनिक जीवन–दृष्टि अपनाना चाहते हैं, किंतु पारिवारिक और सामाजिक दबाव उन्हें परंपराओं से बाँधे रखते हैं। यही द्वंद्व उनके भीतर मानसिक तनाव और अस्थिरता उत्पन्न करता है।

राजेंद्र यादव ने इस संघर्ष को केवल वैचारिक स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन की व्यावहारिक परिस्थितियों में चित्रित किया है। उनके पात्र आधुनिकता को स्वीकार करना चाहते हैं, किंतु सामाजिक संरचना उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता नहीं देती।

7. व्यक्ति की अस्मिता और आत्मसंघर्ष– राजेंद्र यादव के साहित्य में व्यक्ति अपनी पहचान और अस्तित्व की खोज में निरंतर संघर्ष करता दिखाई देता है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति की अस्मिता संकटग्रस्त हो गई है। सामाजिक दबाव और पारिवारिक अपेक्षाएँ उसके व्यक्तित्व को कुंठित कर देती हैं।
"मनुष्य सबसे अधिक स्वयं से हारता है।"[11]

यह कथन राजेंद्र यादव के पात्रों की मानसिक स्थिति को स्पष्ट करता है। उनके पात्र बाहरी संघर्षों से अधिक अपने भीतर के द्वंद्वों से जूझते हैं।

नई कहानी आंदोलन के प्रभाव के कारण राजेंद्र यादव ने व्यक्ति के आत्मसंघर्ष को विशेष महत्व दिया। उनके पात्र आदर्श और यथार्थ, इच्छा और कर्तव्य, स्वतंत्रता और सामाजिक मर्यादा के बीच लगातार संघर्ष करते रहते हैं। यही संघर्ष उनके उपन्यासों को गहरी मनोवैज्ञानिक संवेदना प्रदान करता है।

8. भाषा, शैली और शिल्पगत विशेषताएँ– राजेंद्र यादव की भाषा सरल, सहज और संवादप्रधान है। उन्होंने बोलचाल की भाषा का प्रयोग करके अपने पात्रों को जीवंत बनाया है। उनकी शैली में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, आत्मसंवाद और प्रतीकात्मकता का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

वे छोटी–छोटी घटनाओं और संवादों के माध्यम से पात्रों की मानसिक स्थिति को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा में उर्दू, तद्भव और देशज शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। इससे उनके उपन्यासों में जीवन्तता और यथार्थ का भाव उत्पन्न होता है।

उनकी शैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मध्यवर्गीय जीवन की साधारण घटनाओं को भी गहरी सामाजिक संवेदना से जोड़ देते हैं। यही कारण है कि उनके उपन्यास केवल कथा न रहकर सामाजिक दस्तावेज बन जाते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजेंद्र यादव का उपन्यास साहित्य भारतीय मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं, संघर्षों और अंतर्विरोधों का अत्यंत सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। उनके साहित्य में मध्यवर्गीय व्यक्ति की घुटन, आर्थिक संकट, दांपत्य विफलता, स्त्री–स्वतंत्रता की आकांक्षा तथा आधुनिक जीवन का अकेलापन अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थपरकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

निष्कर्ष– राजेंद्र यादव हिंदी साहित्य के ऐसे महत्वपूर्ण उपन्यासकार हैं जिन्होंने स्वतंत्रोत्तर भारतीय मध्यवर्गीय समाज की जटिलताओं, अंतर्विरोधों और मानसिक संकटों को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त किया। उनका साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का गंभीर दस्तावेज है। उन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक विघटन, दांपत्य संघर्ष, स्त्री–स्वातंत्र्य, नैतिक संकट और व्यक्ति की अस्तित्वगत पीड़ा को अपने उपन्यासों का केंद्र बनाया।

राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज का चित्रण बहुआयामी रूप में मिलता है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'सारा आकाश' मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन की घुटन, सामाजिक दबाव और मानसिक द्वंद्व का अत्यंत प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करता है। समर और प्रभा के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया कि मध्यवर्गीय समाज में व्यक्ति अपनी इच्छाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने में असफल रहता है। परिणामस्वरूप उसका जीवन कुंठा, अकेलेपन और निराशा से भर जाता है। लेखक ने यह दिखाया कि मध्यवर्गीय परिवार बाहर से आदर्शवादी और नैतिक दिखाई देता है, किंतु उसके भीतर संवादहीनता, तनाव और मानसिक दूरी व्याप्त रहती है। इस संदर्भ में लेखक का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है– "परिवार की मर्यादाएँ अक्सर व्यक्ति की स्वतंत्रता को निगल जाती हैं।"[12]

उनके इस कथन को मिश्र जी ने अपनी पुस्तक में लिखा है। यह कथन मध्यवर्गीय जीवन की मूल विडंबना को स्पष्ट करता है। व्यक्ति परिवार और समाज की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए अपनी इच्छाओं का दमन करता रहता है।

राजेंद्र यादव ने मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक समस्याओं को भी अत्यंत गंभीरता से चित्रित किया है। सीमित आय, बढ़ती आवश्यकताएँ और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता व्यक्ति को निरंतर मानसिक तनाव में रखती है। उनके पात्र जीवन की छोटी–छोटी आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करते दिखाई देते हैं। "मध्यवर्ग हमेशा सपनों और अभावों के बीच झूलता रहता है।"[13]

यह कथन मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को अत्यंत सटीक रूप में व्यक्त करता है। मध्यवर्गीय व्यक्ति ऊँचे सपने देखता है, किंतु आर्थिक सीमाएँ उसे निरंतर असफलता और निराशा की ओर ले जाती हैं।

राजेंद्र यादव के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसका मनोवैज्ञानिक यथार्थ है। उनके पात्र बाहरी संघर्षों से अधिक अपने भीतर के द्वंद्वों से जूझते हैं। वे आधुनिक जीवन की भीड़ में रहते हुए भी अकेले हैं। उनके भीतर असुरक्षा, भय और आत्मसंघर्ष लगातार चलता रहता है।
"मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष उसके भीतर चलता है।"[14]

यह कथन राजेंद्र यादव की रचनात्मक दृष्टि को स्पष्ट करता है। उनके लिए साहित्य केवल सामाजिक घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि मनुष्य की आंतरिक चेतना का विश्लेषण भी है।

स्त्री–चेतना के संदर्भ में भी राजेंद्र यादव का साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्त्री को

केवल सहानुभूति की पात्र नहीं माना, बल्कि उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया। 'कुलटा' जैसे उपन्यासों में उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता पर तीखा प्रहार किया। समाज जिस स्त्री को 'चरित्रहीन' कहकर अस्वीकार करता है, लेखक उसी स्त्री के माध्यम से स्वतंत्रता और अस्मिता का प्रश्न उठाते हैं।

"स्त्री को मनुष्य मानने में समाज को सबसे अधिक कठिनाई होती है।"[15]

नई कहानी आंदोलन के संदर्भ में राजेंद्र यादव का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने व्यक्ति की निजी समस्याओं को व्यापक सामाजिक संदर्भों से जोड़कर देखा। उनके साहित्य में आधुनिक जीवन की विडंबनाएँ, अकेलापन, घुटन और मूल्य–संकट अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं।

राजेंद्र यादव ने यह स्पष्ट किया कि आधुनिक मध्यवर्गीय समाज में व्यक्ति का जीवन निरंतर संघर्ष से भरा हुआ है। वह परंपरा और आधुनिकता, आदर्श और यथार्थ, स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों के बीच फँसा हुआ है। यही कारण है कि उनके उपन्यास आज भी उतने ही प्रासंगिक प्रतीत होते हैं जितने अपने समय में थे।

अतः कहा जा सकता है कि राजेंद्र यादव हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना के सबसे महत्वपूर्ण साहित्यकारों में से एक हैं। उनका उपन्यास साहित्य भारतीय समाज के संक्रमणकालीन दौर का जीवंत दस्तावेज है। उन्होंने मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं और अंतर्विरोधों को जिस गहराई और यथार्थपरकता के साथ अभिव्यक्त किया, वह हिंदी उपन्यास साहित्य को नई दिशा प्रदान करता है। उनके साहित्य की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है क्योंकि आधुनिक समाज में व्यक्ति की घुटन, अकेलापन और असुरक्षा की समस्याएँ आज भी उतनी ही तीव्र हैं।

संदर्भ

1. यादव, राजेंद्र. (1960). सारा आकाश. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. 18,42,67,74,81।
2. पांडेय, मैनेजर. (2012). स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास और सामाजिक यथार्थ. इलाहाबाद, किताब महल, पृ. 96।
3. यादव, राजेंद्र. (1966). उखड़े हुए लोग. नई दिल्ली, राजपाल एंड संस, पृ. 22–145।
4. यादव, राजेंद्र. (1970). कुलटा. नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, पृ. 38।
5. शर्मा, रामविलास. (2001). हिंदी उपन्यास और मध्यवर्ग. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, पृ. 112।
6. सिंह, नगेन्द्र. (2004). नई कहानी की भूमिका. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, पृ. 58।
7. यादव, राजेंद्र. (1972). शह और मात. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 54।
8. मिश्र, रामदरश. (2015). हिंदी साहित्य में मध्यवर्गीय चेतना. नई दिल्ली, साहित्य अकादेमी, पृ. 121।
9. वर्मा, रमेश. (2010). आधुनिक हिंदी उपन्यास और समाज. जयपुर, पंचशील प्रकाशन, पृ. 88।
10. तिवारी, अरविंद. (2018). राजेंद्र यादव के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन. कानपुर, ग्रंथम् प्रकाशन, पृ. 143।
11. यादव, राजेंद्र. (1970). कुलटा. नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, पृ. 61।
12. यादव, राजेंद्र. (1970). कुलटा. नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन, पृ. 61।
13. सिंह, नामवर. (1998). कहानीः नई कहानी. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, पृ. 73।
14. भंडारी, मन्नू. (2008). एक कहानी यह भी. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ. 48–132।
15. यादव, राजेंद्र (संपा). (1986–2013). हंस पत्रिका (विभिन्न अंक). नई दिल्ली।